ISSN:2583-8849



प्रमोद भंडारी 'पार्थ'
राजसमंद (राजस्थान)

कैमरे में कैद... रिश्तों से दूर

"पापा, ज़रा मुस्कुराइए... फोटो बहुत अच्छी आएगी।"
अमित ने अपना नया मोबाइल सामने किया और अपने पापा की ओर देखा। व्हीलचेयर पर बैठे पापा ने चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कान लाने की कोशिश तो की, लेकिन उनकी आँखों की थकान छिप नहीं सकी। फोटो खिंचते ही अमित की उंगलियाँ स्क्रीन पर चलने लगीं और कुछ ही पलों में वह तस्वीर इंटरनेट पर पोस्ट हो गई— नीचे लिखा था, 'मेरे पापा, मेरी दुनिया!'
कुछ ही मिनटों में फोन बजने लगा। तारीफों की बाढ़ आ गई—
"वाह! कितने संस्कारी बेटे हैं।"
"आजकल माता-पिता की ऐसी सेवा कौन करता है, भगवान आपको हमेशा सुखी रखे!"
हर नई प्रतिक्रिया और प्रशंसा के साथ अमित के चेहरे की चमक बढ़ती जा रही थी। उसी समय पास बैठे पापा ने बहुत धीमे और संकोच भरे स्वर में कहा—
"बेटा, अगर फोटो खींचने के बजाय सिर्फ पाँच मिनट मेरे पास बैठ जाते, तो शायद मुझे इस तस्वीर से ज़्यादा खुशी मिलती।"
अमित ने एक पल के लिए पापा को देखा, उसे थोड़ा अजीब लगा, लेकिन तभी फोन की स्क्रीन पर एक और नया मैसेज आया और वह फिर से उसी दुनिया में खो गया। पापा ने एक ठंडी सांस ली और खिड़की के बाहर सूनी नज़रों से देखने लगे।
कमरे से बाहर निकलते हुए भी अमित का ध्यान फोन पर ही था। पर पापा की वह बात उसके दिल में कहीं गहराई तक उतर गई थी। वह सीढ़ियों पर ही रुक गया और सोचने लगा—पापा ठीक ही तो कह रहे हैं। पहले वह जब भी पापा के कमरे में आकर बैठता था, तो घंटों उनके पास बैठकर दफ़्तर की बातें और पुरानी कहानियाँ साझा करता था। पर आज? आज वह उनके पास आया तो सही, लेकिन उसका मन वहाँ नहीं था। उसका ध्यान पापा के चेहरे की थकान पर कम और मोबाइल के कैमरे पर ज़्यादा था। उसने महसूस किया कि जाने-अनजाने वह अपनों के साथ बिताए पलों को जीने के बजाय, बस उन्हें रिकॉर्ड करने का आदी हो चुका है।
यह सिर्फ उसकी अकेले की आदत नहीं थी, बल्कि धीरे-धीरे यह पूरा समाज ही इसी दिखावे की लत का शिकार होता जा रहा था। उसे याद आया कि पिछले हफ्ते जब वह एक महंगे भोजनालय में दोस्तों के साथ गया था, तो खाना मेज़ पर आते ही किसी का हाथ निवाले की तरफ नहीं बढ़ा था। सब अपने-अपने कैमरों से फोटो खींचने में लगे थे। खाने का स्वाद तो बाद में लिया गया, पहले उसकी तस्वीर दुनिया को दिखाई गई। पिछले महीने की उसकी पहाड़ों की यात्रा भी तो ऐसी ही थी! वह वादियों की खूबसूरती को आँखों से देखने कम, और उनके सामने खड़े होकर तस्वीरें खिंचवाने और वीडियो बनाने में ज़्यादा व्यस्त था। पूरी यात्रा इसी चिंता में बीत गई कि कौन-सी तस्वीर लोगों को सबसे ज़्यादा पसंद आएगी।
अमित ने एक ठंडी सांस ली। वह समझ गया कि आज लोग पलों को जी नहीं रहे, बस उन्हें फोन में कैद कर रहे हैं। नतीजा यह है कि खूबसूरत लम्हे अब हमारे दिलों की यादों में कम, और मोबाइल की गैलरी में ज़्यादा सिमट रहे हैं।
फोन पर एक और संदेश टिमटिमाया। अमित ने देखा—दफ़्तर के एक साथी ने अपनी नई चमचमाती गाड़ी की

फोटो डाली थी। उसे देखते ही अमित का मन थोड़ा उदास हो गया, मानो उसकी अपनी ज़िंदगी में कोई कमी रह गई हो।

तभी अमित को अहसास हुआ कि यह 'लाइक' और तारीफों का चक्कर भी कितना अजीब है। आज हम अपनी खुशी के लिए कम और दूसरों को दिखाने के लिए ज़्यादा जी रहे हैं। ऐसा लगता है जैसे सबके मन में एक अजीब सी बेचैनी है— कि अगर अपनी खुशियों को इंटरनेट पर नहीं डाला, तो लोगों को पता कैसे चलेगा कि हम खुश हैं? पर वह भूल गया कि स्क्रीन पर दिखने वाली तस्वीरें किसी की पूरी ज़िंदगी नहीं होतीं। लोग सिर्फ अपनी अच्छी और चमकती हुई चीजें ही दुनिया को दिखाते हैं। पीछे का संघर्ष, अकेलापन और उदासी तो हमेशा फोन के पीछे ही छुप जाते हैं।

अमित ने एक पल के लिए आँखें बंद कीं, तो उसे अपना ही घर याद आ गया। रात को खाने की मेज़ पर भी कहाँ कोई किसी से बात करता है! वह, उसकी पत्नी और बच्चे—सब अपनी-अपनी मोबाइल स्क्रीन में डूबे रहते हैं। घर में अब बातें कम होती हैं और उंगलियों की टिक-टिक ज़्यादा सुनाई देती है। इंटरनेट पर एक बटन दबाते ही हज़ारों लोग जुड़ तो जाते हैं, पर दिल की बात कहने के लिए एक सच्चा दोस्त तक नहीं मिलता।

सीढ़ियों पर खड़े अमित ने खुद से पूछा— "मैं यह क्या कर रहा हूँ? असल ज़िंदगी के खूबसूरत रिश्तों को छोड़कर, क्या मैं सिर्फ अपने फोन की प्रोफाइल सजाने में लगा हूँ?"

तभी जेब में रखे फोन के वाइब्रेशन ने अमित का ध्यान खींचा। उसकी नई पोस्ट पर लाइक्स सौ से ज़्यादा हो चुके थे।

अमित ने कुछ पल उस चमकती हुई स्क्रीन को देखा। इंटरनेट की दुनिया की वो तालियां उसे अचानक बहुत खोखली और बेमानी लगने लगीं। उसने एक गहरी सांस ली, फोन का बटन दबाया और उसे पूरी तरह स्विच ऑफ कर दिया।

वह उल्टे कदमों वापस मुड़ा और धीमे से पापा के कमरे की तरफ चल दिया।

पापा ने उसे वापस आते देखा तो चौंककर मुस्कुराए, "क्या हुआ बेटा? कोई और फोटो लेनी है क्या?"

अमित के चेहरे पर इस बार कोई दिखावा नहीं था, बल्कि एक सच्ची और सुकून भरी मुस्कान थी। उसने आगे बढ़कर पापा का हाथ अपने हाथों में लिया और कहा, "नहीं पापा, आज कोई फोटो नहीं खींचनी... आज बस आपके पास बैठना है।"

पापा की थकी हुई आँखों में एक अनोखी चमक और खुशी के आँसू तैर गए। उन्होंने पास रखी कुर्सी की तरफ इशारा किया, "आओ बैठो... बहुत दिन हो गए, खुलकर बातें नहीं हुईं।"

अमित चुपचाप पापा के पास बैठ गया। कुछ ही देर में दोनों पुरानी यादों के गलियारों में खो गए। बातों-बातों में माँ का वह हंसता हुआ चेहरा सामने आ गया—कैसे वे चूल्हे पर गरम-गरम रोटियां सेकती थीं और अमित अपनी थाली लेकर सबसे पहले बैठ जाता था।

फिर बड़ी बहन की बातें छिड़ गईं, जो अमित की हर शरारत को पापा की डांट से बचा लेती थी और त्योहारों पर पूरे घर को अपनी हंसी से गुंजायमान कर देती थी। बचपन की वह सादगी, पहली बार साइकिल से गिरना और पापा का गुस्सा करने के बजाय उसे गले लगा लेना... एक-एक कर गुज़रे ज़माने के कितने ही खूबसूरत लम्हे लौट आए।

कमरे के कोने में मेज़ पर रखा मोबाइल बिल्कुल बेजान पड़ा था। उस पर न जाने कितने नए मैसेज आ रहे होंगे, लेकिन इस बार अमित को उन्हें देखने की कोई जल्दी नहीं थी।

उस शाम अमित ने महसूस किया कि कुछ रिश्तों को कैमरे के फ्लैश की नहीं, बल्कि हमारे वक्त और साथ की ज़रूरत होती है। इंटरनेट की दुनिया की वाहवाही तो पानी के बुलबुले जैसी है, जो अगली पोस्ट आते ही गायब हो जाती है। लेकिन अपनों के साथ बिना किसी दिखावे के बिताया गया एक सच्चा पल, ताउम्र दिल को सुकून देता रहता है।

अमित को अब समझ आ गया था कि इंसान की असली पहचान उसके फोन की प्रोफाइल से नहीं, बल्कि अपनों के साथ बिताए गए इन सच्चे और खूबसूरत पलों से होती है।